हिन्दी साहित्य में प्रस्तावित शोधकार्य

की

रूपरेखा

कन्हैयालाल सेठिया के काव्य में मानव मूल्यः एक अध्ययन

A STUDY OF HUMAN VALUE IN POETERY OF KANHAIYA LAL SETHIA

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर

को

हिन्दी साहित्य में पी.एचडी. डिग्री के पंजीकरण हेतु प्रस्तुतः 2014

निर्देशक
डा. विमला सिंघल
विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग
माणिक्यलाल वर्मा राजकीय
स्नातकोत्तर महाविधालय
भीलवाड़ा–311 001 राज.

शोधकर्ता
22-5-2015
मंजू सारस्वत
द्वारा– यज्ञदत्त सारस्वत
आई.टी.आई. रोड़
बासनी फाटक,शास्त्री नगर
नागौर 341001(राज.)

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Format for Outline of Proposed Research Work
(To be supplied in Two Copies)

1.	Name of Scholar (In English)	:	MANJU SARASWAT
	(In Hindi)	:	मंजू सारस्वत
2.	Title of Research work	:	
	(In English)	:	(A study of Human values in poetry of Kanhaiya Lal Sethia)
	(In Hindi)	:	कन्हैयालाल सेठिया के के काव्य। में मानव मूल्य: एक अध्ययन
3.	Location	:	
	a. Institution/Department where the work is to be done	:	PG Deptt. of Hindi , MLV Govt. PG College, Bhilwara.
	b. Geographical Importance of Proposed Investigation if any	:	N.A.
4.	Introduction Importance of Proposed Investigation, Objectives.	:	3 – 14
5.	Review (Work already done on the subject of proposed Research Study)	:	15
6.	Research Gaps identified in the proposed field of investigation. (Based on the review)	:	16
7.	Major Hypothesis, if any.	:	17
8.	Research Methodology	:	18 – 21
9.	List of References cited	:	22 – 27

22-5-2015

Signature of the candidate with date

Outline Approved

Name and Signature of supervisor with date & Seal

4. प्रस्तावित शोध कार्य का परिचय, महत्व एवं उद्देश्य

(Introduction objective and Importance of Proposed Research work)

मानव एक विचारशील, बुद्धिजीवी प्राणी है। साहित्य मानव के वैचारिक सृजन की सर्वोत्कृष्ट कृति है। साहित्य के माध्यम से हम उस समाज का परिचय प्राप्त कर सकते हैं। साहित्य समाज का दर्पण है, जब-जब समाज में दिग्भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है तभी विद्वान मनीषियों द्वारा अपने साहित्य सृजन द्वारा देश, समाज को मार्गदर्शन दिया जाता है। मनस्वी साहित्यकारों ने इस रूप में मानव मूल्यों एवं समाज व संस्कृति को निरंतर दिशा प्रदान की है।

ऐसे ही युग प्रवर्तक, युगदृष्टा, मनीषी साहित्यकार कन्हैयालाल सेठिया हुए जिन्होंने अपनी सशक्त लेखनी के माध्यम से अनेकानेक बहुमूल्य कृतियों का सृजन हिंदी, राजस्थानी ही नहीं उर्दू भाषा में भी गद्य, पद्य विद्या में किया जिनकी रचनाएं वेद मंत्रों की तरह जीवन को प्रेरित करने वाले सूत्रात्मक भावों की तरह लगती है। कन्हैयालाल सेठिया मानवतावादी व राष्ट्रवादी कवि थे। जिन्होंने मानव मूल्यों पर केंद्रित कर समाज में अपने देश प्रेम व संस्कृति के प्रति अपने काव्य के माध्यम से उनमें वेचारीक चिंतन के लिए झकझोर कर गौरवान्वित होने का पाठ पढ़ाया। उन्होंने बदलते परिवेश में मानव मूल्यों के गिरते स्तर को पूर्ण प्रतिष्ठापित करने का बखूबी कार्य किया जिससे हमारा देश समाज ऋणी है। कन्हैयालाल सेठिया पर शोध कार्य करना अकादमी जगत की महती आवश्यकता है।

मानव मूल्यों की परिभाषा

किसी देश काल और परिस्थिति में जन सामान्य द्वारा प्रदत मान्यताएं ही मानव मूल्य है, जिनकी कसौटिया व्यापक लोक कल्याण व व्यक्ति उदात्तीकरण है, अन्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि मनुष्य श्रेष्ठजन की संज्ञा पाने के लिए जिस मार्ग को अपनायें या अपना व्यवहार उसी के अनुरूप करे। वही आदर्श बन जीवन मूल्य बन गए।

मानव मूल्य

जिनमें त्याग, उत्सर्ग की भावना सर्वोपरि है। आज उपभोक्ता संस्कृति में जहां मनुष्य स्वकेंद्रित होकर मात्र भोग को ही प्रधानता दे रहा है वहां इस समय मानव मूल्यनिष्ठ अकादमी कार्य की उपयोगिता और महत्ता स्वप्रमाणित है।

मानव मूल्यों का अर्थ व स्वरूप

डॉ. धर्मवीर भारती के अनुसार - सार्थकता का पहलु सबसे बड़ा मानव मूल्य है।

आस्बर्न के अनुसार - मूल्य आत्म दर्शन है।

मानव मूल्य का अर्थ

ऐसे गुण ऐसी भावनाएं जिनसे मानव साधारण दिनचर्या से ऊपर उठकर परस्पर करुणा, प्रेम, सहानुभूति, सद्भाव उत्पन्न कर सके।

मानव मूल्य की अवधारणा प्राचीन है। प्रतिमान एवं मानदंड मूल्य के समानार्थी शब्द है। जीवन मूल्यों का विकास जीवन अनुभवों से होता है।

व्यवहारिक मूल्य

व्यवहारिक मूल्य भौतिक जीवन को सुखी बनाने में सहायक होते हैं।

आदर्श मूल्य

नैतिक मूल्य व परमार्थिक मूल्यों को गिनते हैं इन्हीं मूल्यों के द्वारा मानव व्यवहार संचालित होते हैं

आधुनिक युग में रचनाकार मानव मूल्यों के संकट के प्रति हमेशा सजग रहकर साहित्य सृजन किया है। मूल्यहीनता की स्थिति में अमर्यादा, असत्य, अनास्था, अविश्वास, कुंठा एवं प्रतिशोध को जन्म दिया है। जिस तरह तुलसीदास, कबीर दास ने तत्कालीन समाज को मानव मूल्यों से जीने की प्रेरणा दी। जिसका जनमानस पर गहरा प्रभाव पड़ा। वैसा ही राजस्थान के चुरू जिले तथा नागौर जिले की अंतिम सीमा पर स्थित सुजानगढ़ कस्बे में युग प्रवर्तक कवि कन्हेया लाल सेठिया ने अपने काव्य में मानव मूल्यों के आधार पर समाज का मार्गदर्शन ही नहीं बल्कि पूरे देश, राज्य के जनमानस पर छा जाने वाले कवि बन गये। वे यथार्थवादी चिंतक थे। उन्होंने सत्य को कहा वो भी नये ढंग से उनका चिंतन युगबोध के भावो से सलिप्त है। वे समाज को हर मोड़ पर दिशा बोध कराते नजर आते हैं। उनका मानना है कि जब तक जन मन नहीं बदलेगा तब तक वतन की ऊंचाइयों का जतन कैसा। सत्य की बेबाकी पर वे कहते नजर आते हैं—

बलि वासनाओं की दो,
नरियल कुंठा का तोड़ो,
चन्दन,
अहम का घिसो,
बन जाएगा,
तुम्हारा पशु ही प्रभु।

सेठिया जी बेबाकी से कहते हैं-

अवतार मरते नहीं,
मारे जाते हैं,
अस्वीकार कर,
स्वीकारे जाते हैं।

उनके साहित्य में कहीं आडम्बर व दिखावा नहीं दिखाई देता है। कवित्व उन पर हावी नहीं है, वे सहज और सरल शब्दों में बात को ढालने के महारथी हैं। उनका मानना है कि शब्द तो मात्र सहारा है। इसमें चेतना का संचार होना जरूरी है।

नाम रूप की भीड जगत में,
भीतर एक निरंजन।

जीवन पथ की बगिया में बसन्तागम अवश्य होता है।

किसी ने,
बांटे फल,
किसी ने फूल,
किसी ने किसलय,
पर दिन ढले,
सब गले,
कुम्हलाये,
मुरझाए,
तुम आए,
बांटा बीज मंत्र,
बच जाएगी,
बगिया की हरियाली।

ऐसे काव्य मनीषी के साहित्य से सम्बन्धित विविध पक्षों का विस्तृत अध्ययन की साहित्य समाज की मांग को मद्देनजर रखते हुए डॉ, विमला सिंघल, विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग) माणिक्य लाल वर्मा राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा के निर्देशन में शोध हेतु प्रस्तावित किया गया है।

कवि सर्वजन हिताय की भावना का पाठ पढ़ाता दिखाई देता है-

अहिंसा नहीं है

हिंसा का,
नकारात्मक बोध,
जिसमें,
दृष्टि से परे दर्शन,
जीवन से परे आत्मा,
जिसकी मीमांसा अनेकान्त,
भूमिका सर्वोदय।

सेठिया जी का अंतमन और बाहर का परिवेश विविध होते हुए भी एक दूसरे से राग रंजित है-

तुम बन्द कली, मैं खिलता सुमन
मैं तुम मे, मुझ में बीच,
तुम भविष्य में, मैं वर्तमान,
जो रहा भूत को खींच।

कवि अपने प्रिय को कहता है, तुम बंद कली हो और मैं खिला हुआ सुमन हूं, तुम्हारे और मेरे बीच कोई तो आकर्षण है। जो एक दूसरे को अपनी ओर खींचता है। जेसे भविष्य वर्तमान की तरफ।

सौंदर्य चेतना के रूप में उनके विचार की जो हमें सुंदर दिखता है, उसे हम प्रेम करते हैं। साथ ही जिसे हम प्रेम करते हैं, वह हमें सुंदर लगता है। सेठियाजी ने अपने काव्य में जीवन के लगभग सभी पक्षों को अपना विषय बनाया है। समाज के मानव मूल्य का प्रभावी पक्ष के चलते कन्हैयालाल सेठिया की कविताओं में जीवन मूल्यों- एक अध्ययन एक विशिष्ट अभिनव प्रयोग नहीं बल्कि शोध विषय के रूप में सर्वथा उपयुक्त प्रतीत होता है। श्री सेठिया जी के काव्य को शोध में महत्व देने व उनकी रचनाओं में उद्भाषित जीवन मूल्यों को सापेक्ष व्यापकता दिलाने का प्रयास करने के लिए ही पूर्ण विश्वास के साथ शोध की रूपरेखा प्रदान की गई है।

प्रस्तावित शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार है-

1. जीवन मूल्यों में बदलतेअपसंस्कृति के वातावरण को अकादमिक चर्चा के केंद्र में लाना।
2. राजस्थानी भाषा एवं संस्कृति को भारत की नही विश्व में प्रतिष्ठा दिलाने के आकांक्षी कन्हैलाल सेठिया काव्य केंद्रित शोध महत्व स्वप्रमाणित है। अभी तक म द स विश्वविद्यालय ही नहीं संपूर्ण राजस्थान में सेठिया जी के साहित्य पर शोध की कमी को दूर कर एक नये विषय के प्रति मार्गदर्शन करना।

शोध संदर्भित साहित्य का सिहावलोकन

श्री सेठिया जी के काव्य उपदेशात्मक शैली को छोड़कर आत्मबोध के माध्यम से आदर्श मानवीयता को रूपायित करते हैं। "मैं तरु का एकांकी पक्षी" कविता में पक्षी और वृक्ष के बिम्ब द्वारा वह एक बड़े सत्य को उद्धाषित करते हैं :-

इसके दुख में मेरा दुख है,
इसके सुख में मेरा सुख है,
मैं हूं प्यासा चातक वन का,
ये मेरा सावन का धन,
इसका जीवन मेरा जीवन।

इस कविता में अपने को एक पंछी की संज्ञा में बांध अपने जीवन पक्षों को उद्घाटित करते हैं तो लगता है उनकी कविता पूरी सृष्टि को दिव्य स्पर्श दे रही है। सेठिया जी इंसान और उनके सरोकारों से अनायास ही जुड़े प्रतीत होते हैं "प्रार्थना" जेसे व्यापक संदर्भ में जब वह लिखते हैं कि:-

मौन प्रार्थनाएं जल्दी पहुंचती है ईश्वर तक,
क्यों कि मुक्त होती है वे शब्दों के बोझ से।

वर्तमान युग में मनुष्य की संवेदना व्यावसायिक वृत्ति के कारण सूखती जा रही है अब तो प्राणी मात्र में व्याप्त प्रेम भाव भी उससे अछूता नहीं रह पाया है। कवि की चिंता आज के परिपेक्ष्य में कितनी प्रासंगिक है कवि का धर्म यथार्थ को चित्रित करने तक सीमित नहीं रहता वह उन मूल्यों और आदर्शों को भी अपनी रचना के अन्तराल से उभारने का प्रयत्न करता है। आज समाज में चारों ओर गिरते मूल्य के दर्शन कदम कदम पर होते हैं।

तब सेठिया जी की कविता मार्गदर्शन करते हुए कहती है-

हटा तिमिर का जाल,
ग्वाल बाल ले गायों का दल,
जहां दूब है पास जल,
वही जा रहा लौटेगा फिर,
होते संध्या काल,
हटा तिमिर का जाल।

तो लगता है कि उनकी कविता ने व्यक्ति संवेदना के बेहतरीन पक्षों को आयाम दिया है। स्वार्थ व यथार्थ सुख की तलाश में आदमी का आत्मीय लगाव न तो उनकी जन्मभूमि से रह गया है और न अपने परिवार और समाज से संबंधों को तोड़ कर बेहतर सुविधाओं के लिए आदमी चिड़िया की तरह फुर्र हो जाता है, अपने साथी को दुर्दिन में पड़ा देखकर कौन उसके साथ जीने मरने को तैयार होता है। इसी को अभिव्यंजित करते हुए कवि कहता है-

कोई मेरा मीत नहीं है,
दुर्बल मन जब मेरा पाया,
तूने अनुचित लाभ उठाया।

दुर्बलता से लाभ उठाना मानवता की जीत नहीं है। संसार की गति द्वंदात्मक है। सुख-दुख, आशा -निराशा, जीवन- मृत्यु, रात- दिन, मिलन- वियोग, के रहस्य को समझने की चेष्टा कवि को महान बनाती है। यदि कोई कवि जब अपनी रचना में दर्शन के पक्षों को शामिल करता है तो यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि उसके लेखन में वे बिन्दु आये जो अपनी दार्शनिकता और संवेदना में आम से लेकर खास तक प्रत्येक व्यक्ति स्पंदन को अपने जीवन में शामिल कर सके और मनुष्य को अपने तमाम उपादानों के साथ वह पक्ष उपलब्ध करवा सके जो उसे अच्छे मनुष्य के साथ-साथ देवत्व की संज्ञा में भी ले जा सकता है।

आ हम अपनी पीड़ा पा ले,
यही बची है जीवन में बस,
समझ सके तो इसमें भी रस,
घृणा,
जिसमें जग करता आया,
आ उसको हम अपना बना ले।

श्री कन्हैया लाल सेठिया अपने जीवन के ज्ञात सत्य पर पर्दा डालने की कोशिश नहीं करते हैं, बल्कि सच्चाई का साक्षात्कार करने की हिम्मत जुटाते हैं। सर्वत्र मृगतृष्णा है। शांति भ्रान्ति का ही पर्याय है, फिर भी भ्रान्ति के पीछे लोग पागल बन कर दौड़ रहे है।

कहां यह केसा अज्ञान,
जग के दुख सब जान बूझकर,
फंस ही जाता इस में नर।

श्री सेठियाजी मनुष्य को दुर्दम्य जिजीविषा तथा हिम्मत को अनेक कविताओं में उभारने की चेष्टा करते हैं। कवि का आह्वान है कि-

ओ चलने वाले रुकने का,
तुम नाम वहाँ मत लेना,
जो संदेशा भेजा वह,
मंजिल तक पहुंचा देना।

श्री सेठिया जी ने अपनी कविताओं में माना कि जिंदगी को जीने के लिए किसी बंधी हुई लीक पर चलना नहीं होता है बल्कि अपना रास्ता अपने तरीके से स्वयं को निर्मित करना होता है। वे यह भी मानते हैं कि हर और विषम परिस्थितियाँ है। हमें हर कदम पर विष का प्याला पीना होगा लेकिन उस प्याले में भी वे जीवन के विविध तत्वों का समावेश मानते हैं। उन्होंने जीवन को दीप की तरह माना है। वे कहते हैं:-

दीप बता तो क्यों जलता है,
कह दे जग के तम को हरने,
प्रिय के पथ आलोकित करने,
पर न सका हर अपना ही एक,
यह तो भारी असफ़लता है।

राष्ट्रीय चेतना के सर्जक कवि राष्ट्रीय भावना को जन-जन के मानस को झकझोरने का कार्य किया।

चौक तुम्हारे जयनादो से

हल्दी घाटी जाग उठे

चम्बल की शीतल लहरों में

महान क्रांति की आग उठे।

इसी प्रकार कवि ने अग्नि वीणा में-

आज शेर की मांदो में है,

गीदड़ का आवास,

नहीं रहा क्या तुम को अपने,

साहस का विश्वास,

मांग रही है कितने युग,

पीड़ित मां बलिदान,

किन्तु छुपाये बैठे हो तुम,

कायर अपने प्राण।

श्री सेठियाजी "वसुधैव कुटुम्बकम्" का भारतीय संदेश विश्व भ्रातृत्व भाव को उजागर करने में है।

आओ आज जगाये घर घर मानवता का दीप,

देश काल की तोड़ श्रृंखला सब के बने समीप,

रहे न जग में, जिससे कोई पीड़ित दीन अनाथ,

चले जोत की ओर छोड़कर अन्त तिमिर का हाथ।

श्री सेठिया जी में समकालीनता का प्रखर बोध है। असफलताओं से विचलन की दार्शनिकता उनके काव्य में नहीं है। वे तो जीवन के सर्जक है और जीवन उनका। उन्होंने भले ही निराशाजनक

संवेदना के साथ प्रस्तुति दी हैं अन्त में उनकी कविता मानव और जीवन के सार्थक पक्षों को ही उद्‌घाटित करती है-

आए सुख के दिन सजनी,

बीत गया पतझड़ का मास,

आई मधुश्रृत लाई रास,

दुख की रात बिताई गिन,

सुख के दिन भी गिन सजनी।

जीवन की आस्था का यह कवि निश्चित ही अपने शब्दों के माध्यम से संवेदना प्रस्तुत करता है। जय मानव समाज की अमूल्य धरोहर है।

'अजगर की लीक', 'मौन प्रार्थनाएं', 'पाथल' र 'पीथल', 'धरती धोरा री' जेसी यशस्वी कविताएं विविध शिक्षा बोर्डों, विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में संस्तुत की गई है। सेकेण्डरी बोर्ड ऑफ एज्यूकेशन राजस्थान की कक्षा दसवीं हेतु निर्धारित हिंदी पाठ्यपुस्तक गद्य -पद्य -संग्रह में सेठिया जी की रचनाएं प्रमुख रूप से संकलित की गई है। यह एक विडंबना ही रही कि सेठिया जी के कार्य पर शोध कार्य सीमित मात्रा में हुआ। इसी कारण बृहद अध्ययन के रूप में प्रस्तुत कार्य की रूपरेखा निर्मित की गई है।

श्री सेठिया जी साहित्य मनीषी के रूप में सर्वत्र जाने जाते हैं। पद्मश्री अवार्ड 2004, मूर्ति देवी पुरस्कार, सूर्यमल मिश्रण पुरस्कार व भारतीय ज्ञानपीठ एवं हिंदी साहित्य सम्मेलन, राजस्थानी भाषा साहित्य व संस्कृति अकादमी एवं अनेक संस्थाओं द्वारा पुरस्कारों से आपको सम्मानित किया जा चुका है। नागौर जिले की छोटी खाटू स्थित 'श्री छोटी खाटू हिंदी पुस्तकालय' द्वारा प्रतिवर्ष किसी एक साहित्यकार को महाकवि कन्हैया लाल सेठिया मायड़ भाषा साहित्य पुरस्कार दिया जाता है। वर्ष 2014 में पिलानी के राजस्थानी साहित्यकार नागराज शर्मा को दिया गया। आज के राष्ट्रकवि के रूप में सेठियाजी निसंदेह राजस्थान की एक धरोहर है। जिनकी काव्य विरासत को पाकर कवि, साहित्यकार व समाज गौरवान्वित है। सेठियाजी एक युग कवि है, राष्ट्रकवि है और प्रेरणादायक उद्‌घोषक है। उनके काव्य पर शोध की आवश्यकता है। इसी प्रेरणा से इस शोध विषय का चयन किया गया है।

5. प्रस्तावित विषय पर पूर्व में किए गए कार्यों की समीक्षा

(Review work already done on the subject of proposed research study)

प्रस्तावित अध्ययन के शीर्षक से स्पष्ट होता है कि कन्हैयालाल सेठिया मानव मूल्यों के परिपेक्ष में काव्य का अध्ययन पर अब तक शोध कार्य हुआ नहीं है। सीमित मात्रा में ही इस महान मनीषी पर शोध कार्य हुआ व हो रहा है-

1. मुंबई विश्वविद्यालय में प्रोफेसर विष्णु सरवदे के माध्यम से "दीप किरण और सेठिया जी का काव्य विषय" पर लघु शोध प्रबंध 2009 के रूप में कार्य किया गया।
2. विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के प्रोफेसर शैलेंद्र कुमार शर्मा ने सेठिया जी के काव्य पर 2010 में एक संगोष्ठी शोध पत्र प्रस्तुत किया।
3. महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर से "कन्हैयालाल सेठिया की कविताओं का अनुशीलन "पर राजकीय महाविद्यालय टोंक के हिंदी विभागाध्यक्ष के निर्देशन में विजेंद्र सिंह मीणा का शोध कार्य 2013 से कर रहे हैं।

फिर भी एक मुर्धन्य साहित्यकार के प्रति अकादमी में अवश्य कमी या उपेक्षा भाव को दूर करने का प्रयास कर उनके विस्तृत अध्ययन कर शोध की योजना मेंने प्रस्तुत की है।

6. अनुसंधान के प्रस्तावित क्षेत्र में शोध कमियों की पहचान

(Research gape identified in the proposed field of investigation based on review)

प्रस्तावित अध्ययन के क्षेत्र में यही कमी खलती है कि राजस्थान की धरा के महान साहित्यकार सेठिया जी का काव्य प्रतिभा के सिद्धहस्त कवि होते हुए भी वे प्रचार प्रसार से अलग रहे। इसी कारण इस मनीषी को काव्य की उतनी व्यापकता नहीं मिली, जितनी सार्थक कार्य के लिए अपरिहार्य है। साथ ही प्रचार की कमी के कारण उनका काव्य देश की विभिन्न परिधियों तक तो पहुंचा पर उस पर गंभीर चिंतन, मनन, शोध आदि की कमी अवश्य बनी रही।

राजस्थान की जनता के वे जन मानस के कवि थे। यहां की संस्कृति शौर्य का वर्णन कर उन्होंने अमिट छाप छोडी है। "धरती धोरा री "के माध्यम से तो राजस्थान के कण-कण में समा गए, परंतु शोध की कमी से वे विश्वविद्यालयों की गरिमा में व्यापक नहीं हो पाये। " पाथल र' पीथल" जेसी रचना जन-जन के हृदय में तो उतर गई। कण-कण से इसकी अनुगुज सुनाई देती, पर फिर भी उतनी व्यापकता को प्राप्त नहीं कर पाई जितना उस साहित्य की महत्ता के लिए अपेक्षित था। लघु शोध, सेमिनार आदि तक ही य़ह क्षेत्र सीमित रहा।

प्रस्तुत शोध में श्री सेठिया जी के काव्य में निर्देशित मानव मूल्यों का संपूर्ण विवेचन कर इस कमी को सीमित करने का प्रयास किया जा सकेगा।

7. शोध परिकल्पना

(Research Hypothesis)

1. शोध परिकल्पना - कन्हैयालाल सेठिया के काव्य में मानव मूल्य :एक अध्ययन

   शोध कार्य प्रतिष्ठापित - मानव मूल्यों को अपने आधार पर जो युगबोध करने की नयी दिशा दी है, इससे मानव समाज को लाभान्वित करना।
2. प्रतिष्ठित मानव मूल्यों का अनुशीलन तो होगा ही परंतु सेठिया जी जैसे मनीषी 7 ने अपने साहित्य से एक नयी चेतना, राष्ट्रीय भावना का जो उत्कृष्ट स्वरूप बताया उसका विशद विश्लेषण करना एक महती आवश्यकता है। इसकी पूर्ति शोध के माध्यम से ही संभव है।
3. वर्तमान की उपभोक्तावादी मनोवृति पर वैचारिक दृष्टि से चिंतन प्रस्तुत कर उसकी निकृष्ट स्थितियों पर विश्लेषण कर नयी पीढ़ी को एक मार्गदर्शन मिलेगा।
4. "धरती धोरा री", "पाथल र' पीथल' की अनुगूंज राजस्थान के कण-कण में व्याप्त है, पर अकादमिक क्षेत्र में उनके साहित्य में जीवन मूल्यों का आंकलन कर उच्च जीवन के मूल्यों की तरफ वर्तमान पीढी का ध्यान आकृष्ट करना।

8. शोध पद्धति

(Research Methodology)

प्रस्तावित अध्ययन के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन में जोसफ गिबाल्डी की पुस्तक एम. एल. ए. हैंडबुक का अनुसरण करते हुए इंडेक्स पद्धति पूर्णरूपेण परीक्षित है, तथा आधुनिक अध्येताओं द्वारा निर्देशित विस्तृत रूप से प्रयुक्त की जाती है, तथा आधुनिक अध्येताओं द्वारा निर्देशित निश्चित रूप से प्रयुक्त की जाती है। इस पद्धति में अध्येता द्वारा जितना संभव हो अधिकाधिक संदर्भ संकलित किए जाते हैं उन्हें एक साथ तर्कसम्मत क्रम में आयोजित किया जाता है और उनके आधार पर उन्हें समन्वित कर एक चिंतन प्रसूत शोध के रूप में विकसित किया जाता है।

साक्षात्कार पद्धति - परिवारजन, मित्रों व समग्र पुस्तक के संकलन करने वाले लेखक श्री जुगलकिशोर जेठलिया से साक्षात्कार करना व जानकारी प्राप्त करना। अध्यायों में वर्णित सामग्री है।

- अध्यायों में वर्णित सामग्री हेतु वैज्ञानिक शोध प्रविधि प्रयोग करना।
- प्रश्नावली, साक्षात्कार, पत्राचार विधि की प्रयुक्ति।

अनुलग्नक-1

कन्हैयालाल सेठिया के काव्य में मानव मूल्य: एक अध्ययन

प्रथम अध्याय

मानव मूल्य की परिभाषा और क्षेत्र

- मानव मूल्यों की परिभाषा
- मानव मूल्य अवधारणा- भारतीय व पाश्चात्य विचारों की दृष्टि में
- वर्तमान में मानव मूल्य विशद चर्चा

द्वितीय अध्याय

कन्हैयालाल सेठिया व्यक्तित्व व कृतित्व

- श्री सेठिया का जीवन परिचय
- सेठिया जी का व्यक्तित्व व कृतित्व
- रचनाकार की रचनाओं का परिचय

बाल्यावस्था से तरुणावस्था तरुणावस्था से प्रौढ़ावस्था

1 वनफूल 2 अग्निवीणा 3 मेरा युग 4 दीप किरण 5 आज हिमालय बोला

6 अनाम 7 निर्ग्रंथं 8 स्वगत 9 हेमाणी 10 प्रतिबिंब 11खुली खिड़कियां

चोड़े रास्ते 12 प्रणाम 13 मर्म 14 अनाम

तृतीय अध्याय

कन्हैयालाल सेठिया के काव्य में व्यक्तिनिष्ठ मानव मूल्य

- साहित्य सृजन व मूल्य निष्ट एवं व्यक्तित्व चिंतन
- वैयक्तिक चिंताओं का बोध
- वैयक्तिक त्याग व समर्पण का मूल्य
- मूल्यनिष्ठ व्यक्ति से बनता परिवार, समाज और देश एक परिदृष्य

चतुर्थ अध्याय

कन्हैयालाल सेठिया के काव्य में परिवारनिष्ठ मूल्य

- पारिवारिक जीवन का बदलता परिदृष्य
- पारिवारिक जीवन की आवश्यकता
- परिवारनिष्ठ मूल्य अवधारणा
- भारतीय परिवार व्यवस्था एवं मूल्य
- भारतीय संस्कृति संयुक्त परिवार व्यवस्था नये स्वरूप में

पंचम अध्याय

कन्हैयालाल सेठिया के काव्य में समाज व देशनिष्ट मानव मूल्य

- मानव को समाज हित में जीने की प्रेरणा
- राष्ट्र व समाज के प्रति कर्तव्य बोध
- राष्ट्र के प्रति उच्च मानव मूल्यों की अवधारणा से चेतना

षष्ठम अध्याय

कन्हैया लाल सेठिया का काव्य विश्व परिदृष्य में मानव मूल्यों की समीक्षा

- काव्य में निहित वसुधैव कुटुम्बकम् के भावो की समीक्षा
- विश्व परिदृष्य पर मानव मूल्यों की स्थापना के नये आयाम

सप्तम अध्याय

कन्हैयालाल सेठिया के काव्य मे भाषिक सौंदर्य

- काव्य भाषा
- अलंकार
- छंद

उपसंहार

बदलते समय में मानव मूल्यों के परिपेक्ष में कन्हैयालाल सेठिया के काव्य का अध्ययन कर मानवीय, सामाजिक, राष्ट्रीय, भावनाएं शिथिल होती जा रही है उनके साहित्य सृजन के शोध से मानवीय भावनाओं को पुनर्जीवित, पुन: प्रतिष्ठापित करने हेतु विषद गहन अध्ययन से मार्गदर्शन।

प्रस्तावित शोध कार्य को 2 वर्षों में पूर्ण करने का संकल्प है जिसका बिंदुवार विवरण निम्न प्रकार है-

प्रथम वर्ष

सेठियाजी की पुस्तकों, ग्रंथों, रचनाओं का अध्ययन व उन पर किए गए शोध और समीक्षात्मक ग्रंथों का अध्ययन कर शोध सामग्री का संकलन तथा इसी निमित्ता विभिन्न स्थानों पर स्थित विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों के पुस्तकालयों और शोध संस्थाओं को संस्थानों की सूचना संकलन के लिए यात्रा।

द्वितीय वर्ष

6 माह की अवधि में अध्ययन कर शोध को लिखना व संपूर्ण शोध कार्य का टंकण कार्य करवाना।

प्रस्तावित शोध कार्य के लिए निम्न सुविधाओं का उपयोग किया जाएगा-

1. मा. ला. व राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भीलवाड़ा का पुस्तकालय
2. राजस्थान हिंदी साहित्य अकादमी उदयपुर
3. श्री छोटी खाटू हिंदी पुस्तकालय, छोटी खाटू जिला नागौर का पुस्तकालय
4. भारतीय साहित्य अकादमी, दिल्ली
5. कन्हैयालाल सेठिया साहित्य ट्रस्ट, कोलकत्ता
6. म द स विश्वविद्यालय, अजमेर
7. राजकीय पुस्तकालय, नागौर

परिशिष्ट :ग्रंथ सूची

(List Of Reference Cited)

आधार ग्रंथ -

1. अनाम 1974 ई.
2. अग्निवीणा 1942 ई.
3. आकाशगंगा 1990 ई.
4. आज हिमालय बोला 1962
5. खुली खिड़कियां चोड़े रास्ते 1967
6. दीप किरण 1956
7. देह - विदेह 1987
8. निर्ग्रथं 1976
9. निष्पत्ति 1993
10. प्रणाम 1970
11. प्रतिबिंब 1970
12. मर्म 1971
13. मेरा युग 1948
14. वनफूल 1940
15. वामन विराट 1991
16. श्रेयास 1997
17. स्वगत 1996
18. त्रयी 2001

राजस्थानी भाषा :

1. अघोरी काल 1987
2. कक्को कोड रो 1989
3. कूं -कूं 1970

4. गलगचिया
5. घर कुचा -घर मंजला 1979
6. मायड रो हेलो 1984
7. मींझर 1960
8. रमणिये रा सोरठा 1940
9. लीलटाँस 1973
10. सबद 1985
11. सतवाणी 1986
12. हेमाणी 1999

उर्दू भाषा:

1. गुलची 2001
2. ताजमहल 1975

1. कन्हैयालाल सेठिया समग्र (हिन्दी-1), संपादक जुगलकिशोर जैथलिया, राजस्थान परिषद, कोलकाता रचनाकाल 1936 ई. से 1975 ई.
2. कन्हैयालाल सेठिया सामग्र (हिंदी-2), संपादक जुगलकिशोर जेठलिया, राजस्थान परिषद, कोलकाता, 1996 से 2005
3. कन्हैयालाल सेठिया समग्र (राजस्थानी), संपादक जुगल किशोर जेठलिया, राजस्थान परिषद कोलकाता, वर्ष 2005
4. कन्हैयालाल सेठिया समग्र 4 (अनुवाद खण्ड) संपादक जुगलकिशोर जेठलिया, राजस्थान परिषद कोलकाता वर्ष 2007
5. प्रज्ञा पुरुष, संपादक डॉ. झूमरमल व भानीराम, महावीर इंटरनेशनल, कोलकाता।

सहायक ग्रंथ

1. कवि कन्हैयालाल सेठिया और उनका काव्य, (राजस्थान साहित्य अकादमी) 1983
2. हिंदी साहित्य एवं संवेदना का विकास-रामस्वरूप चतुर्वेदी (लोकभारती प्रकाशन 2002)

3. हिंदी काव्य - इंदिरा गांधी खुला विश्वविद्यालय 2005
4. हिंदी साहित्य-युग और प्रवृतियां - शिव शर्मा, (अशोक प्रकाशन 1996)
5. पदचाप प्रज्ञा पुरुष की (फिला डिवीजन डॉक्यूमेंट्री फिल्म)
6. मूल्य मीमांसा - डॉ गोविंद चंद्र पांडे
7. मानव मूल्य और साहित्य - डॉ धर्मवीर भारती,
8. हिंदी दशरूपक - प्रो. भोला शंकर व्यास
9. अप्रतिम काव्य पुरुष - डॉ. प्रेम शंकर त्रिपाठी
10. इंद्रधनुषी काव्य के सर्जक महाकवि सेठिया - श्रीमती रेखा सेठिया
11. शब्द ब्रह्मा के साधक कविवर कन्हैयालाल सेठिया - डॉ. उषा द्विवेदी
12. जीवन की समग्रता के कवि सेठिया जी - डॉ. भगवतीलाल व्यास
13. आत्मबोध एवं चिंतन के अभिनव मंगलाचरण - श्रीमती तारा दुग्गड़
14. कन्हैयालाल सेठिया की काव्य साधना - डॉ मूलचंद सेठिया
15. प्रसाद जीवन ओर साहित्य - पं. अंबिका प्रसाद वाजपेयी
16. जयशंकर प्रसाद चिंतन कला - डॉ इंद्रनाथ मदान
17. प्रसाद साहित्य में मनोभावों के स्वरूप - डॉ. इंद्रप्रभा पाराशर
18. भारतीय काव्यशास्त्र - डॉ. उदयभनु सिंह
19. आधुनिक हिंदी कविता में बिम्ब विधान - डॉ. केदारनाथ सिंह
20. कामायनी एक पुनर्विचार - श्री गजानंद माधव मुक्तिबोध
21. प्रसाद और कामायनी - श्री गंगाप्रसाद पांडेय
22. हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास सिद्धांत और अध्ययन आचार्य गुलाब राय
23. प्रसाद जी की कला आचार्य गुलाब रॉय
24. विचार दर्शन डॉ रामकुमार वर्मा
25. आधुनिक हिंदी कविता के चित्र विधान डॉ राम रतन सिंह भ्रमर
26. निराला की काव्य साधना डॉ रामविलास शर्मा
27. कामायनी अनुशीलन श्रीरामलाल सिंह
28. काव्य- दर्पण पं. रामदहिन मिश्र
29. कामायनी का पुनर्मूल्यांकन पं. रामस्वरूप चतुर्वेदी

30. हिंदी कविता -तीन दशक डॉ. रामदरस मिश्र
31. जयशंकर प्रसाद वस्तु और कला महाकवि प्रसाद डॉ रामेश्वर खंडेलवाल
32. कवि प्रसाद की काव्य साधना श्री रामनाथ सुमन
33. साहित्य कला डॉ रामनंदन तिवारी भारत नंदन
34. काव्य में अभिव्यंजना वाद श्री लक्ष्मीनारायण सुधांशु
35. प्रसाद और उनकी कविता श्री विश्वम्भर मानव
36. प्रसाद और उनका साहित्य श्री विनोद शंकर व्यास
37. कामायनी चिंतन डॉ विमल कुमार जैन

पत्र पत्रिकाएं

1. दैनिक राजस्थान पत्रिका,
2. दैनिक भास्कर,
3. दैनिक पंजाब केसरी,
4. दैनिक नवज्योति,
5. दैनिक जागरण,
6. साहित्य कुंज
7. अन्तर्जाल,
8. सारस्वत जगत, सारस्वत प्रिंटिंग प्रेस बीकानेर,
9. हंस राजस्थान साहित्य अकादमी
10. साहित्य अमृत-(मासिक) साहित्य पत्रिका नई दिल्ली,
11. कादंबिनी --दिल्ली प्रेस, हिंदुस्तान टाइम्स ग्रुप नई दिल्ली,
12. स्वर्ग विभा (ऑनलाइन) डॉ. श्रीमती तारासिंह मुंबई
13. सृजन गाथा जयप्रकाश मानस
14. बाल वाटिका, नंद भवन, कांबा खेड़ा पार्क, भीलवाड़ा
15. गवरजा महादेवी जेठू, चारभुजा चौक, लाडनू
16. दिनमान दिल्ली प्रेस नई दिल्ली
17. मुक्ता दिल्ली प्रेस,नई दिल्ली

18. सरिता दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली
19. राष्ट्र भारती मासिक मधुमति
20. हमारा दृष्टिकोण,
21. जन बोध,
22. समकालीन भारतीय साहित्य
23. शोध संदर्भ
24. कृति और विथी
25. अभिव्यक्ति
26. झरोखे लेख
27. टीका टिप्पणी